संरक्षक

प्रो. आर.के. कोठारी
कुलपति
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

प्रो. जोया चक्रवर्ती
अधिष्ठाता, कला संकाय
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

डॉ. श्रुति शर्मा
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

संयोजक

डॉ. विनोद शर्मा
सह-आचार्य एवं पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
मो. 9950997599

सह-संयोजक

डॉ. मीता शर्मा
सह-आचार्य, हिंदी विभाग
ई-मेल : meetasharma2008@gmail.com

आयोजन सचिव

डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह
सह-आचार्य, हिंदी विभाग
मो. 9571088878
ई-मेल : jitendraciil@gmail.com

सह-सचिव

डॉ. मंदाकिनी मीना
सहायक-आचार्य, हिंदी विभाग

डॉ. अर्जुन सिंह
सहायक-आचार्य, हिंदी विभाग

आयोजन समिति

डॉ. उर्वशी शर्मा
डॉ. दीपिका विजयवर्गीय
डॉ. गीता सामौर
डॉ. रेणु व्यास
डॉ. जगदीश गिरी
डॉ. विशाल विक्रम सिंह
श्रीमती अनिता रानी
श्रीमती प्रियंका कुमारी गर्ग
डॉ. करतार सिंह
डॉ. वीरेन्द्र सिंह
श्री सुंदरम शांडिल्य
डॉ. कैलाश पंवार
डॉ. तारावती मीना
श्रीमती वर्षा वर्मा
दीप कुमार मित्तल

प्रेषक :

डॉ. विनोद शर्मा
सह-आचार्य एवं पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग
संयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर-302004
मो.: 9950997599
ई-मेल: vinoddr68@gmail.com

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
(25 - 26 मार्च, 2019)

श्रीमान्/श्रीमती .....

.....

.....

.....

स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष

स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं ज़यंती
के उपलक्ष्य में आयोजित

द्वि-दिवसीय
राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय साहित्य और समाज में महात्मा गांधी

25-26 मार्च, 2019

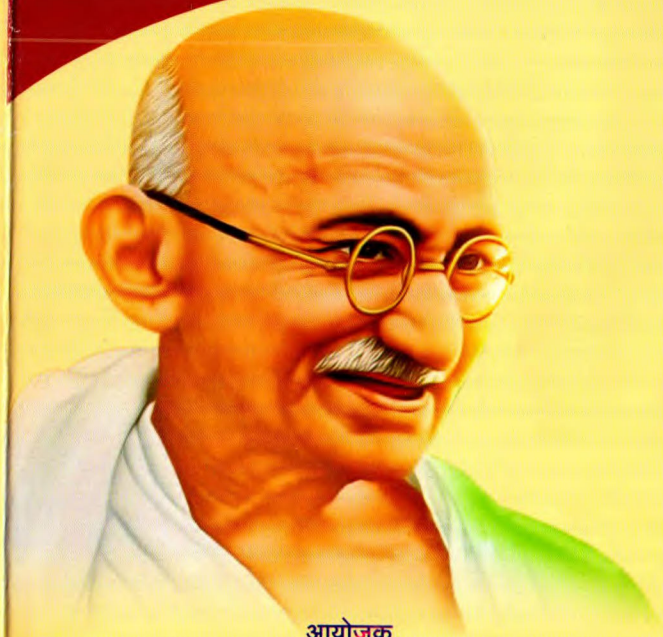

आयोजक
हिंदी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर-302004
फोन. 0141-2256528

आयोजन स्थल
मानविकी पीठ सभागार
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

भारतीय साहित्य और समाज में महात्मा गांधी

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं स्वर्ण जयंती के अवसर पर देशभर में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की शृंखला में हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा दिनांक 25-26 मार्च, 2019 को **भारतीय साहित्य और समाज में महात्मा गांधी** विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। मानवता के संरक्षक, अहिंसा के पुजारी, सत्याग्रह के प्रतिष्ठापक, स्वाधीनता आंदोलन के संचालनकर्ता, 20वीं शताब्दी के निर्विरोध नायक महात्मा गांधी के विचार हताश, निराश एवं कुंठित मानव जाति के लिए संजीवनी का कार्य करते हैं। गांधी जी ने सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, उपवास, सर्वोदय, अस्तेय, अपरिग्रह आदि पुरातन भारतीय संकल्पनात्मक, अवधारणात्मक शब्दों को वाङ्मय से निकालकर प्रायोगिकता के साथ यह सिद्ध किया कि ये अभी भी उतने ही प्रासंगिक और प्रभावी हैं जितने अपने वैभवकाल में थे।

ग्राम स्वराज, स्वभाषा एवं स्वदेशी का आग्रह, अस्पृश्यता निवारण, मद्य निषेध, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, सांप्रदायिक सौहार्द्र, स्वावलंबन और सर्वोदय के विचारों ने न मात्र एक नए समाज की विकास यात्रा की आधारशिला रखी अपितु उसे अनुप्राणित भी किया। साहित्य को उद्दात्त मूल्यों के संवाहक और समाज के पथप्रदर्शक के रूप में प्रस्तुत करने के पक्षधर महात्मा गांधी के वैचारिक प्रभाव ने समस्त भारतीय साहित्य को बहुविधि प्रभावित किया है।

विश्व का यह महान पुरुष चाहता था कि संपूर्ण और अखण्डित भारतवर्ष में हिंदी का विस्तार हो और यह संपूर्ण भारतवर्ष की भाषा बने। वर्ष 1910 में जब अखिल भारतवर्षीय हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना महामना पं मदन मोहन मालवीय जी की अध्यक्षता में हुई जिसमें गांधी जी ने अपनी शुभेच्छाएं भेजी और पूरा समर्थन दिया। सम्मेलन के 8वें और 35वें अधिवेशन की अध्यक्षता भी उन्होंने की। उन्होंने अनेकों साहित्यकारों को हिंदी में लेखन के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया। गांधी जी महान साहित्यकार नहीं थे, लेकिन भारत के लगभग सभी साहित्यकार सन् 1920 से 1940 तक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से उनसे प्रभावित हुए। उनमें से कई गांधी जी के संपर्क में आए। कई ने उनके रचनात्मक कार्यक्रम में 'राष्ट्रीय भाषा' सूत्र से यह वाक्य अपनाया था- 'अगर हमें अपने देश की आत्मा से सच्चा प्रेम है, तो हमें कम-से-कम उतने महीने हिंदुस्तानी सीखने में लगाने ही चाहिए जितने वर्ष हमने अंग्रेजी सीखने में बिताए हैं।'

प्रेमचंद जी गोरखपुर में गांधी जी का भाषण सुनकर इस तरह प्रभावित हुए कि उन्होंने अपनी सरकारी नौकरी छोड़ दी। फलतः हिंदी साहित्य जगत में उपन्यास सम्राट बने। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने भी गांधी जी से प्रभावित होकर, 'उपेक्षिता उर्मिला' को लेकर 'साकेत' की रचना के बारे में गांधी जी से पत्र व्यवहार किए। इस प्रकार गांधी जी की प्रेरणा से हिंदी भारतीय साहित्य में बोलचाल की सरल-सहज भाषा तथा कहानी और कविता का माध्यम बनी।

महात्मा गांधी का कथन था कि 'समाज के वंचित, दलित-शोषित, दरिद्रनारायण की सेवा करो।' फलस्वरूप कई काव्य और उपन्यास लिखे गए। सन् बीस से लेकर चालीस के बीच पचासों उपन्यास इस दिशा में अग्रसर हुए। मैथिलीशरण गुप्त के 'किसान' और 'अछूत' खंडकाव्य, रवीन्द्रनाथ की 'चांडालिका', शरतचंद्र चटर्जी का 'पल्ली समाज' इसी कोटि के हैं। गांधी जी ने सेवा, संयम एवं अहिंसा का जो पाठ पढ़ाया था, उसी तथ्य पर आधारित सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का व्यंग्य नाटक 'बकरी' है। नरेंद्र कोहली का 'शंबूक की हत्या' भी इसी कोटि की है। हिंदी साहित्यकारों के साथ-साथ, दक्षिण भारत के साहित्यकारों में भी गांधी जी के भाषण का अद्वितीय प्रभाव रहा। राजेंद्र प्रसाद हों या जयप्रकाश नारायण, द्वारिका प्रसाद हों या सेठ गोविन्द दास, सभी में 'एक जगत' और 'मानव-मानव सब हैं समान' की भावना ही मिलती है। गांधी जी के जिन भाषा विषयक विचारों से भारतवासी प्रभावित हुए, उनमें उन लेखों का स्थान प्रमुख था, जो 'यंग इंडिया', 'हरिजन सेवक', 'हरिजन बंधु' आदि में प्रकाशित हुए थे। इसके अतिरिक्त गांधी जी के द्वारा लिखी गई 'हिन्द स्वराज' जैसी पुस्तक और तत्कालीन विभिन्न व्यक्तियों के नाम पर लिखे गए पत्रों आदि से भी प्रभावित हुए थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के सात दशक बाद भारत की विकास यात्रा में गांधी की विचारधारा किस प्रकार सहायक रही है? गांधी चिंतन भारतीय साहित्य में सामाजिक समरसता लाने में किस प्रकार सहायक है? बदलते जीवन मूल्यों एवं जटिल वैश्विक परिस्थितियों में गांधी के जीवन और चिंतन से हम क्या सबक ले सकते हैं? बदली हुई वैश्विक आंतरिक परिस्थितियों में क्या गांधी की दृष्टि को पुनर्व्याख्यायित करने की आवश्यकता है? जैसे सवालों पर परिचर्चा के माध्यम से हम गांधी की स्मृति को नमन करना चाहते हैं।

प्रस्तावित विषय :

- भारतीय साहित्य में गांधी चिंतन
- हिंदी साहित्य में गांधी चिंतन
- भारतीय समाज और गांधी चिंतन
- भारतीय राजनीति और गांधी
- गांधी और हिंदी पत्रकारिता
- युवा वर्ग और गांधी दर्शन
- महात्मा गांधी और शिक्षा
- महात्मा गांधी और सर्वोदय
- सामाजिक समरसता और गांधी
- हिंदी कथा साहित्य में गांधी चिंतन
- काव्य साहित्य में गांधी चिंतन
- कथेतर गद्य विधाओं में गांधी चिंतन
- हिंदी आलोचना और निबंध में गांधी चिंतन
- नाट्य साहित्य में गांधी चिंतन
- साहित्य विमर्श में गांधी
- वर्तमान परिवेश गांधी दर्शन की उपादेयता
- गांधी का आर्थिक दर्शन
- विकास व आर्थिक नियोजन की गांधीवादी संकल्पना
- समाजवाद और गांधी दर्शन
- गांधी और प्रवासी साहित्य
- गांधी और भारत की संकल्पना
- महात्मा गांधी : एक लेखक और वक्ता
- गांधी के व्यक्तित्व में कस्तूरबा का योगदान

पंजीयन प्रपत्र

नाम.....

पद .....

संस्था.....

.....

शोधपत्र का शीर्षक.....

.....

पंजीयन शुल्क

शिक्षक - रूपये 1500

शोधार्थी - रूपये 800

अन्य छात्र - रूपये 400

नोट : प्रतिभागी अपने ठहरने की व्यवस्था स्वयं करें।